SET-4

Series SGN

कोड नं.
Code No. 39

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

Candidates must write the Code on the title page of the answer-book.

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **15** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **5** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।
- Please check that this question paper contains **15** printed pages.
- Code number given on the right hand side of the question paper should be written on the title page of the answer-book by the candidate.
- Please check that this question paper contains **5** questions.
- **Please write down the Serial Number of the question before attempting it.**
- 15 minute time has been allotted to read this question paper. The question paper will be distributed at 10.15 a.m. From 10.15 a.m. to 10.30 a.m., the students will read the question paper only and will not write any answer on the answer-book during this period.

भारत की ज्ञान परंपराएँ और पद्धतियाँ

KNOWLEDGE TRADITIONS AND PRACTICES OF INDIA

निर्धारित समय : 3 घण्टे — *अधिकतम अंक : 70*

Time allowed : 3 hours — *Maximum Marks : 70*

निर्देश : ***सभी*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

Instructions : *Attempt **all** questions.*

खण्ड क
(पठन कौशल)

SECTION A
(Reading Skills)

1. (क) निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *2×5=10*

वास्तुविद्या अथवा शिल्पशास्त्र — स्थापत्य विज्ञान — का अध्ययन प्राचीन भारत में आयुर्वेद (औषधिविज्ञान), धनुर्वेद (धनुर्विद्या का विज्ञान), ज्योतिष (ज्योतिर्विज्ञान), आदि तकनीकी विषयों के साथ किया जाता था । पुराने ग्रंथों में वास्तु शब्द का प्रयोग भवन के स्थान या भवन के अर्थ में प्राप्त होता है । आगे चलकर अन्य विषय जैसे मंदिर निर्माण, नगर नियोजन, सार्वजनिक या निजी भवन और किले आदि इस शास्त्र में सम्मिलित किए गए जिसमें किसी भी ढाँचे का निर्माण एक पवित्र कार्य माना जाता था ।

अथर्ववेद में किसी भवन के विभिन्न भागों के उल्लेख प्राप्त होते हैं जैसे बैठने का कमरा, भीतरी कोष्ठ, पवित्र अग्नि का कमरा, पशुशाला और स्वागत कक्ष (अथर्ववेद, IX.3) । सांख्यायन गृह्य सूत्र (लगभग 500 ई.पू.) में तीन अध्यायों में भवन निर्माण के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों का वर्णन है । कौटिल्य के अर्थशास्त्र (लगभग 300 ई.पू.) में नगर नियोजन, किला निर्माण तथा अन्य नागरिक संरचनाओं के निर्माण का उल्लेख है । राजा भोज द्वारा लिखे गए समरांगण सूत्रधार (1010 – 55 ई.) में स्थान के परीक्षण की पद्धतियों, मिट्टी का विश्लेषण, नापने की प्रणालियाँ, स्थपति (वास्तुकार) तथा उसके सहायकों की योग्यताएँ, भवन निर्माण-सामग्री, योजना के क्रियान्वयन के बाद नींव की रचना, आधार साँचों तथा प्लान, अभिकल्प और ऐलीवेशन के प्रत्येक भाग के तकनीकी ब्योरे की चर्चा की गई है । दक्षिण भारत के दो प्रमुख ग्रंथों मयन्मत (1000 ई.) और मानसार (1300 ई.) सम्मिलित रूप से दक्षिणी (द्रविड़) की प्राचीन वास्तु योजना व अभिकल्प के सामान्य दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं । किन्तु इनमें से पहले में तो व्यावहारिक दृष्टिकोण है जबकि दूसरे में विज्ञान का सैद्धांतिक पक्ष ।

(i) वास्तु की व्याख्या प्राचीन ग्रंथों में की गई व्याख्या के अनुरूप कीजिए । *2*

(ii) किन्हीं दो विषयों का उल्लेख कीजिए जो प्राचीन भारत में अध्ययन के अंग थे । *2*

(iii) अथर्ववेद के उल्लेख के अनुसार भवन के विचार का वर्णन कीजिए । *2*

(iv) वास्तुशास्त्र के अंतर्गत राजा भोज का ग्रंथ किस बात का वर्णन करता है ? *2*

(v) मयन्मत और मानसार के अनुसार वास्तुशास्त्र के दृष्टिकोण का वर्णन कीजिए । *2*

(ख) निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $2 \times 5 = 10$

लघुचित्र (मिनिएचर पेंटिंग्स) पुस्तकों और एलबमों पर, तथा नष्ट होने वाली सामग्री पर जैसे काग़ज़ और कपड़े पर बनाए गए हैं । बंगाल के पाल भारत में लघुचित्रों के निर्माताओं में अग्रणी थे । मुग़ल काल में लघुचित्रों की कला अपने शिखर पर पहुँची । लघुचित्रों की परंपरा को चित्रकला की राजस्थानी शैलियों जैसे कि बूँदी, किशनगढ़, जयपुर, मारवाड़ और मेवाड़ के कलाकारों ने जारी रखा । रागमाला चित्र भी इसी शैली के अंतर्गत आते हैं और इसी प्रकार ब्रिटिश राज में निर्मित कंपनी पेंटिंग्स भी ।

दुर्भाग्य से लकड़ी और कपड़े पर निर्मित प्राचीन लघुचित्र पूर्णत: नष्ट हो गए हैं । सबसे प्राचीन उदाहरण जो पूर्वी भारत में पाल युग के आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और नवीं शताब्दी के मध्य के हैं, वे बौद्ध यंत्रों, रैखिक (ग्राफ़िक) प्रतीकों के निरूपण हैं जो मंत्र तथा 'धरणी' के लिए दृश्य-सहायक थे । प्रतिमाविज्ञान के सिद्धांतों के अनुरूप ये बौद्ध लघुचित्र प्रज्ञापारमिता जैसे बौद्ध विचारों का देवता रूप प्रदान करते हैं, जो सभी बौद्धों की जननी के रूप में गोपनीय ज्ञान का मानव रूप थी । बौद्ध चित्र समतल धरातलों पर लाल और सफ़ेद रंगों में बनाए गए हैं । इनकी प्रेरणा धातु की मूर्तियों से प्राप्त हुई जिनसे उभार (रिलीफ़) का भ्रम होता है । लघुचित्रों का निर्माण भित्ति चित्रों (म्यूरल) के नियमों के अनुसार हुआ है, और अनुपातों के नियम को माप की कठोर आचार-संहिता से नियमित किया गया है । अग्रसंक्षेपण जैसे प्रभाव मूर्तिकला के अध्ययन से व्युत्पन्न हुए थे न कि वास्तविकता से ।

जैन चित्रों से गुजरात घराने का विकास हुआ । वहाँ से आगे यह राजस्थान और मालवा तक फैला । इससे राजपूत शैली के चित्रों की उत्पत्ति हुई और अंतत: मुग़ल कला में भारतीय और फ़ारसी शैलियों का सम्मिश्रण हुआ ।

(i) लघुचित्र भारत के किस भाग से तथा कब प्रारंभ हुए ? 2

(ii) लघुचित्र को परिभाषित कीजिए । 2

(iii) राजस्थानी लघुचित्रों की चार शैलियों का उल्लेख कीजिए । 2

(iv) बौद्ध लघुचित्रों की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । 2

(v) लघुचित्रों की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । 2

(a) Read the passage given below and answer the following questions :

Vāstu-vidyā or Śilpaśāstra — the science of architecture — is one of the technical subjects studied in ancient India, along with Āyurveda (science of medicine), dhanurveda (science of archery), jyotiṣa (astronomy), etc. In the earliest texts, the word Vāstu occurs in the sense of a building site or the building itself. Later on, other subjects such as temple construction, town planning, public and private buildings and forts were included in the discipline in which the construction of a structure was regarded as a sacred act.

In the Atharvaveda there are references to different parts of the building such as sitting-room, inner apartment, room for sacred fire, cattleshed and reception room (Atharvaveda, IX.3). The Sāṅkhāyana Gṛhya Sūtra (c. 500 BCE) describes in three chapters the ceremonials performed for constructing a building. Kautilya's Arthaśāstra (c. 300 BCE) deals with town planning, fortifications and other structures of civil nature. Samarāngaṇa Sūtradhāra, authored by King Bhoja (1010 – 55 CE), discusses methods of examination of a site, analysis of the soil, systems of measurement, qualifications of the sthapati (architect) and his assistants, building materials, consecration of the plan followed by construction of foundation, basal mouldings and technical details for each part of the plan, design and elevation. The two principal south Indian texts, Mayamata (1000 CE) and Mānasāra (1300 CE), share a common perception of architectural plan and design of the southern (Drāvida) vintage but while the former has a practical outlook, the latter develops the theoretical side of the science.

(i) Explain Vastu as explained in ancient texts.

(ii) Name any two subjects that were part of studies in ancient India.

(iii) Describe the concept of building as mentioned in Atharvaveda.

(iv) What does the King Bhoja's text cover under the architecture ?

(v) Describe the perception of architecture by Mayamata and Mānasāra.

(b) Read the passage given below and answer the following questions :

Miniature paintings are executed on books and albums, and on perishable material such as paper and cloth. The Palas of Bengal were the pioneers of miniature painting in India. The art of miniature painting reached its zenith during the Mughal period. The tradition of miniature paintings was continued by the painters of different Rajasthani schools of painting, like Bundi, Kishangarh, Jaipur, Marwar and Mewar. The Ragamala paintings also belong to this school, as do the Company paintings produced during the British Raj.

Unfortunately, early miniatures in wood and cloth have been completely lost, the earliest extant belonging to the late 8^{th} or mid 9^{th} centuries of the Pala period in eastern India, are representations of Buddhist *yantra,* graphic symbols which were visual aids to the *mantra* and the *Dharani*. Conforming to the canons of iconography, these Buddhist miniatures deify Buddhist thought such as *Prajñāpāramitā*, who, as the mother of all the Buddhas, was the personification of esoteric knowledge. The Buddhist paintings were drawn in red and white, forming colour planes. The inspiration came from the metal images, giving an illusion of relief. Miniatures were painted according to the rules of mural painting, the rule of proportions being regulated by strict codes of measurement. Effects such as foreshortening were derived from the study of sculpture rather than from reality.

The Jain paintings gave rise to the school of Gujarat, from where it spread further to Rajasthan and Malwa. This originated Rajput painting and the subsequent fusion of the Indian and Persian styles in Mughal art.

(i) When and in which part of India did the miniature painting start ?

(ii) Define a miniature painting.

(iii) Name four Rajasthani schools of miniature painting.

(iv) Mention two salient features of Buddhist miniature paintings.

(v) Mention two major features of miniature paintings.

खण्ड ख
(विश्लेषणात्मक कौशल)
SECTION B
(Analytical Skills)

2. निम्नलिखित अनुच्छेदों को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *4+6=10*

(क) भारत में नृत्य की लंबी परंपरा रही है । नृत्य से संबंधित बहुत-सी सामग्री उपलब्ध है जो ई.पू. दूसरी सदी से लेकर 21वीं सदी ईसवी तक की है । उदाहरणस्वरूप हमारे पास एक 'नृत्य करती लड़की' की पीतल की मूर्ति है जो मोहनजो-दड़ो से प्राप्त हुई और एक टूटा हुआ धड़ नृत्यमुद्रा में है जो हड़प्पा से प्राप्त हुआ है । सुविधा के लिए, हम भारतीय नृत्य के इतिहास को तीन कालों में बाँटते हैं — शास्त्रीय, मध्यकाल और आधुनिक काल । नृत्य पर प्रथम शास्त्रीय ग्रंथ जो आज भी उपलब्ध है, वह है भरत मुनि का 'नाट्यशास्त्र' (लगभग दूसरी सदी ई.पू.) । यह नृत्य का स्पष्ट और विस्तृत विवरण देता है । कहा जाता है कि दर्शकों में प्रदर्शन को रोचक बनाए रखने के लिए अप्सराएँ (स्वर्गीय नृत्यांगनाएँ) प्राचीनतम नाटकों में नृत्य प्रदर्शन करती थीं ।

नृत्य या तो मार्गी होता है, या देशी, ये दो कोटियाँ सभी कलाओं पर लागू होती हैं । मार्गी मानक और औपचारिक परंपरा है और देशी लोक और परिवर्तनशील परंपरा । नृत्य का एक अन्य वर्गीकरण जैसा कि हम देखते हैं, स्वरूप में तांडव और लास्य है । एक अर्थ में तांडव, जिसमें नृत्य चाहे महिलाओं के द्वारा किया गया हो या पुरुषों के द्वारा, क्रियाओं और भावनाओं की तीव्र अभिव्यक्ति है । दूसरी ओर लास्य लालित्य, कोमलता और मधुर भावों की अभिव्यक्ति है । इनमें तीन प्रमुख घटक हैं — नाट्य, नृत्य और नृत्त — जो अन्य घटकों के साथ-साथ शास्त्रीय नृत्य की रचना करते हैं । नाट्य का संबंध नाटक से है; यह मंच प्रदर्शन का एक नाटकीय तत्त्व है ।

(ख) भारतीय लोकनृत्य और वनों या पर्वतों में रहने वाले समुदायों के नृत्य बड़े सरल होते हैं और उनके द्वारा सामूहिक उत्सवों या आचारों के अंग रूप में प्रदर्शित किए जाते हैं । ये नृत्य हर संभव अवसर पर प्रदर्शित होते हैं : जैसे ऋतुओं के आगमन, बच्चे का जन्म, विवाह और त्योहार, शिकार या भोजन संग्रह जैसी सामाजिक गतिविधियाँ आदि अवसरों पर ।

नृत्य रूपों का एक बड़ा समूह है जो शास्त्रीय नहीं है । इन नृत्य रूपों में उभयनिष्ठ बात केवल यह है कि इनकी उत्पत्ति गाँवों में हुई है । इनमें से अधिकांश बहुत सरल तथा कम-से-कम कदम या गति वाले होते हैं । पुरुष और महिलाएँ कुछ नृत्य अलग-अलग करते हैं, जबकि कुछ में वे साथ-साथ भी प्रदर्शन करते हैं । अधिकांश अवसरों पर नर्तक स्वयं गाते भी हैं और कलाकार वाद्ययंत्रों में उनका साथ देते हैं । प्रत्येक नृत्य रूप की एक विशेष वेशभूषा होती है । बहुत-से वेशों में नगीने लगे होते हैं । यद्यपि बहुत-से प्राचीन लोक नृत्य और आदिवासी नृत्य हैं, उनमें बहुतों में निरंतर सुधार किया जा रहा है ।

(i) भारत में नृत्य का लंबा इतिहास रहा है । उपर्युक्त अंश के आधार पर मार्गी और देशी नृत्य रूपों की व्याख्या कीजिए तथा भारत में उन अवसरों और स्थानों का उल्लेख कीजिए जहाँ पर ये दो नृत्य परंपराएँ पनपीं । *4*

(ii) भारत में नृत्य परंपराओं की संघर्ष की स्थिति पर टिप्पणी कीजिए । अपने नृत्यों के विशिष्ट सांस्कृतिक दाय के संरक्षण में हम क्या योगदान दे सकते हैं ? इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । *6*

Read the passages given below and answer the following questions :

(a) Dance has a long history in India. A large amount of material related to dance, dating from as early as the 2^{nd} century BCE up to the 21^{st} century CE, is available. For example, we have a bronze 'dancing girl' figurine from Mohenjo-daro and a broken torso from Harappa in a dance pose. For convenience, we may divide the history of Indian dance into three periods — classical, middle and modern. The first still available classical manual on dance is Bharata Muni's *Nāṭyaśāstra* (about 2^{nd} century BCE). It gives a clear and detailed account of dance. It is said that *apsarās* (celestial dancers) were made to perform in the earliest dramas to make the performance interesting for the audience.

Dance is either *mārgī* or *deśī,* the two categories that apply to all arts. *Mārgī* is the standard, formal tradition; *deśī* is folk, variable tradition. Another classification of dance, as we have noted, is *tāṇḍava* and *lāsya* in character. In one sense *tāṇḍava* stands for the vigorous expression and actions and feelings regardless whether the dance is performed by men or women. *Lāsya*, on the other hand, stands for elements of grace and softness and gentle emotions. There are three main components — *nāṭya, nṛtya* and *nṛtta* — which together with other elements make up the classical dance. *Nāṭya* corresponds to drama; it is the dramatic element of a stage performance.

(b) Indian folk dances and the dances of small forest and hill communities are simple dances, and are performed as a part of some community celebration or observance. These dances are performed for every possible occasion: to celebrate the arrival of seasons, the birth of a child, a wedding and festivals, social activities such as hunting and food gathering.

There is a large body of non-classical dance forms. The only thing common among these dance forms is their rural origins. Most of them are extremely simple with a minimum of steps or movements. Men and women perform some dances separately, while in some performances they dance together. On most occasions, the dancers sing themselves, while being accompanied by artists on the instruments. Each form of dance has a specific costume. Most costumes are flamboyant with extensive jewels. While there are numerous ancient folk and tribal dances, many are constantly being improved.

(i) Dance has a long history in India. Based upon reading the above text, explain the Margi and Desi dance forms and mention the occasions and places where these two dance styles flourished in India.

(ii) Comment on the struggling state of dance traditions in India. Express your views on how we can contribute to preserve our unique cultural heritage of dances.

3. निम्नलिखित विस्तृत उत्तरीय प्रश्नों में से किसी ***एक*** का उत्तर दीजिए : *15×1=15*

(i) किसी एक प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए प्राचीन और आधुनिक शिक्षा पद्धतियों की तुलना कीजिए । नवयुवकों में बेचैनी को कैसे कम किया जाए ? टिप्पणी कीजिए ।

(ii) "भारत में कृषि कर्म की दीर्घ और विविध परंपरा रही है । इसमें उपयुक्त मिट्टी और अच्छे बीजों का चुनाव, सिंचाई और खाद देने की विधियाँ, फ़सलों का संरक्षण और अनाज भंडारण तथा पशुचर्या और मत्स्यपालन सम्मिलित हैं ।" टिप्पणी कीजिए ।

(iii) बौद्ध धर्म के महान् सत्यों में एक यह है कि मानव के प्रत्येक दुख का कोई 'कारण' होता है । दुखों के संदर्भ में कारण-कार्य के इस प्रत्यय को स्पष्ट कीजिए । बौद्ध धर्म के नैतिक मूल्यों पर टिप्पणी कीजिए ।

Answer any ***one*** of the following long-answer questions :

(i) Explaining the salient features of one of the ancient Indian universities, draw comparisons between ancient and modern systems of education. Comment on how to minimize restlessness among the youth.

(ii) "India has a rich and diverse tradition of agricultural practices. They include the selection of right soil and good seeds, techniques of irrigation and manuring, crop protection and grain storage, as well as animal husbandry and fish culture." Comment.

(iii) One of the noble truths of Buddhism is that all human suffering has a 'cause'. Explain the concept of cause and effect with reference to suffering. Comment on the ethical values of Buddhism.

खण्ड ग : चिंतन कौशल

SECTION C : Thinking Skills

4. निम्नलिखित लघु-उत्तरीय प्रश्नों में से किन्हीं ***पाँच*** के उत्तर दीजिए : *3×5=15*

(i) पतंजलि के अनुसार भाषा में व्याकरण का उद्देश्य क्या है ?

(ii) कौन-से कारक भारतीय समाज को बहुवादी बनाते हैं ?

(iii) प्राचीन भारत में व्यापार केवल आर्थिक समृद्धि का स्रोत नहीं वरन सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी बढ़ावा देता था । स्पष्ट कीजिए ।

(iv) उन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनसे हाथ से निर्मित काग़ज़ के उत्पादन और पांडुलिपियों की लेखन-कला में ह्रास हुआ ।

(v) शस्त्रों के प्रशिक्षण हेतु उपयुक्त स्थल का वर्णन कीजिए ।

(vi) अच्छी गुणवत्ता वाले रत्नों को समझाइए तथा लिखिए कि रत्नों के दोष क्या होते हैं ।

Attempt any ***five*** of the following short-answer questions :

(i) What is the purpose of grammar in language according to Patanjali ?

(ii) What factors make India a pluralistic society ?

(iii) Trade in ancient India was not merely a source of economic prosperity but also promoted cultural exchange. Explain.

(iv) Mention the features responsible for decline in production of handmade paper and art of writing manuscripts.

(v) Describe the suitable ground for weapons training.

(vi) Explain good quality gems and also mention what the defects of gems are.

5. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए चार विकल्प दिए गए हैं । सबसे उपयुक्त विकल्प को चुनकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए । *1×10=10*

(i) गार्गी, मैत्रेयी या लोपामुद्रा जैसी नारियाँ किसकी उदाहरण हैं ?

(क) आचार्या और भाषाविद्

(ख) घरेलू महिलाएँ

(ग) नृत्याँगनाएँ

(घ) खिलाड़ी महिलाएँ

(ii) नालंदा पुस्तकालय के तीन बहुमंज़िला भवनों के नाम थे :

(क) स्थिरमति, शीलभद्र और शांतरक्षित

(ख) रत्नसागर, रत्नरंजिका और रत्नोदधि

(ग) नाट्यगृह, पुस्तकालय और वाचनालय

(घ) शांताराम, शीलनिधि और स्वप्नगृह

(iii) प्राचीन भारत में एक प्रसिद्ध व्यापार मार्ग निम्नलिखित में से कौन-सा था ?

(क) कपास मार्ग

(ख) ऊन मार्ग

(ग) काग़ज़ मार्ग

(घ) रेशम मार्ग

(iv) पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' में __________ अध्याय हैं ।

(क) छह

(ख) आठ

(ग) दस

(घ) बारह

(v) निम्नलिखित में से कौन-सा कवि भक्ति आंदोलन से संबद्ध ***नहीं*** है ?

(क) नामदेव

(ख) जयदेव

(ग) रविदास

(घ) तिरुवल्लुवर

(vi) कौटिल्य के अनुसार अच्छे शासन प्रबंध का आधार क्या है ?

(क) धन

(ख) शक्ति

(ग) ज्ञान

(घ) न्याय

(vii) जीवन के चार उद्देश्य 'पुरुषार्थ-चतुष्टय' हैं — धर्म, __________, काम और मोक्ष ।

(क) नाट्य

(ख) काव्य

(ग) अर्थ

(घ) वेद

(viii) चार आश्रम हैं — ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और

(क) धर्म

(ख) मोक्ष

(ग) संयास

(घ) महर्षि

(ix) बौद्ध नीतिशास्त्र __________ महान् सत्यों पर आधारित है ।

(क) चार

(ख) आठ

(ग) तीन

(घ) छह

(x) पारंपरिक रूप से पांडुलिपियाँ किस पदार्थ पर लिखी जाती थीं ?

(क) भोजपत्र

(ख) काग़ज़

(ग) जूट

(घ) सन (हेम्प)

For each of the following questions, four alternative answers are given. Select the most appropriate alternative and write it down in your answer-book.

(i) Women like Gargī, Maitreyī or Lopāmudrā are examples of

(a) Āchāryās and dialecticians

(b) Housewives

(c) Dancers

(d) Sportswomen

(ii) Nālandā's library had three multi-storey buildings, namely,

(a) Sthiramati, Śīlabhadra and Śāntarakṣita

(b) Ratnasāgara, Ratnarañjika and Ratnodadhi

(c) Natyagriha, Pustakalaya and Vachanalaya

(d) Shantarama, Shilnidhi and Swapnagriha

(iii) Which one of the following was a famous trade route in ancient India ?

(a) Cotton route

(b) Woollen route

(c) Paper route

(d) Silk route

(iv) Pāṇini's *Ashtadhyayi* comprises of __________ chapters.

(a) Six

(b) Eight

(c) Ten

(d) Twelve

(v) Which one of the following poets does ***not*** belong to Bhakti movement ?

(a) Nāmdev

(b) Jayadeva

(c) Ravidās

(d) Thiruvalluvar

(vi) According to Kautilya, what is the basis of good governance ?

(a) Money

(b) Power

(c) Knowledge

(d) Justice

(vii) The four ends of life *puruṣārtha catuṣṭaya* are *dharma,* ________, *kāma* and *mokṣa.*

(a) *Nāṭya*

(b) *Kāvya*

(c) *Artha*

(d) Vedas

(viii) The four āśramas are brahmacarya, gṛhastha, vanaprastha and

(a) Dharma

(b) *Mokṣa*

(c) Sanyāsa

(d) Maharshi

(ix) Buddhist ethics is based on ____________ noble truths.

(a) Four

(b) Eight

(c) Three

(d) Six

(x) Traditionally, on what material was a manuscript written ?

(a) Birch bark (bhūrja patra)

(b) Paper

(c) Jute

(d) Hemp